एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मीठी तुलसी की खेती एवं औषधीय उपयोग

(*दीपक कुमार, प्रदीप कुमार कुमावत एवं रणजीत सिंह बोचलिया)
शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू (180009)
*pandayagronomy@gmail.com

मीठी तुलसी ओसीमम बेसिलिकम प्रजाति बहुत ही उपयोगी है क्योंकि इसमें मीठा तुलसी का तेल मिलता हैं। यह लेमिएसी कुल का पौधा है इसे हिंदी में तुलसी, संस्कृत में सुलभा, ग्राम्या, बहूभंजरी एवं अंग्रेजी में होली बेसिल के नाम से जाना जाता है। जिसकी ऊंचाई 30 से 80 सेंटीमीटर होती है। इसमें तेल कोशिकाएं बहुत होती हैं जो सुगंधित तेल प्रदान करती हैं। तुलसी की ओसीमस सेंक्टेम प्रजाति के सारभूत तेल की अधिक कीमत होती है, किन्तु तेल की मात्रा कम मिलती है।

तुलसी एक औषधीय पौधा है। तुलसी के सभी भागों जैसे जड़, तना, पत्ती,फूल और बीज का इस्तेमाल किसी न किसी रूप में किया जाता है। इसका प्रयोग परफ्यूम व कास्मेटिक इंडस्ट्रीज में अधिक होता है। तुलसी की व्यावसायिक खेती करके कमाई की जा सकती है। देश की प्रमुख आयुर्वेदिक कम्पनियाँ तुलसी की सप्लाई को सुनिश्चित करने के लिए किसानों से कॉन्ट्रैक्ट फ़ॉर्मिंग भी करवाती हैं।

औषधीय उपयोग:-

- तुलसी का सेवन करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है।
- कोलेस्ट्रोल नियंत्रण करने में मदद करती है।
- पत्तियों के रस का नियमित सेवन से दिल संबंधी समस्याओं का निदान हो जाता है।
- तुलसी का इस्तेमाल बुखार, सर्दी-खाँसी, दाँतों और साँस सम्बन्धी रोगों में भी लाभदायक होता है। तुलसी में विषाणुओं और जीवाणुओं से लड़ने की क्षमता होती है आयुर्वेदिक और यूनानी दवाओं और कॉस्मेटिक उद्योग में तुलसी की खूब माँग रहती है।
- जलवायु: तुलसी उष्ण कटिबंध एवं कटिबंधीय दोनों तरह जलवायु का पोधा है।

मृदा: तुलसी क्षारीय मिट्टी, उचित जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है। इसकी अम्लीयता 5.5 से 7 के बीच होनी चाहिए। इसे ज़्यादा बारिश या सिंचाई भी नहीं चाहिए। सिंचित जगहों के लिए तुलसी की अगेती खेती उपयुक्त होती है। इसके लिए फ़रवरी के आख़िर तक नर्सरी में बीजों की बुआई करनी चाहिए। ताकि अप्रैल माह की शुरुआत में पौधे तैयार हो जाएँ। खेती करनी हो तो नर्सरी अप्रैल-मई के दौरान करनी चाहिए। ताकि बारिश तक पौधे रोपाई के लिए तैयार हो जाएँ।

तुलसी की किस्में: कुसुममोहक एवं सुधा विकार CIMAP लखनऊ द्वारा विकसित किस्में

नर्सरी तैयार करना:- 200 से 250 ग्राम बीज एक हेक्टयेर के लिए बीज पर्याप्त होता है। बीज का भाव लगभग ₹500 प्रति किलोग्राम है। नर्सरी को पुआल से ढक दें व सिंचाई करें तुलसी का बीज 3 से 10 दिन में

पुआल को हटा दें। ज्यादा गर्मी के दिनों में हल्का पानी सुबह और शाम लगाएं 20 से 25 दिन के बाद में पौधा रोपण के लिए तैयार हो जाता है।

नर्सरी में तुलसी के बीजों को डालने से पहले मिट्टी में गोबर की खाद मिलाकर उसे तैयार करना चाहिए। फिर बीज को 'मैनकोजेब' या गोमूत्र से उपचारित करके उसे क्यारियों में डालना चाहिए। नर्सरी में कोकोपिट ट्रे या छोटी क्यारियों में बीज लगाने के बाद हल्की सिंचाई करना चाहिए।

रोपाई: नर्सरी से पौधे उखाड़ने के तुरंत बाद पौधे को गीले बोरे से ढक दें। जिससे अधिक गर्मी के कारण पौधे न मुरझाए। पौधों की रोपाई शाम के समय करें और पौधे की आपस में दूरी 3 सेंटीमीटर तथा लाइन से लाइन की 45 सेंटीमीटर रखें। प्रत्येक क्यारी की रोपाई करने के बाद सिंचाई तुरंत करते जाएं। बादल या हल्की वर्षा वाले दिन इसकी रोपाई के लिए बहुत उपयुक्त होते हैं।

उर्वरक: इसके लिए 200 से 250 क्विंटल सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद को जुताई के समय बराबर मात्रा में बिखेर दें। इसके अलावा तुलसी की बुआई के समय 50 किलो गोबर की खाद में 1 किलोग्राम ट्राईकोडरमा मिलाकर खेत में बिखेर दें। तुलसी की खेती में अधिक पैदावार करने के लिए 25 किलोग्राम नाइट्रोजन 16 किलोग्राम फास्फोरस तथा 16 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ के लिए पर्याप्त है। अंतिम जुताई के समय नाइट्रोजन का तीसरा भाग 8 किलोग्राम और शेष दूसरे उर्वरकों की संपूर्ण मात्रा मिट्टी में मिला दे। रोपाई के लगभग 20 से 25 दिन बाद 8 किलो नाइट्रोजन का भी प्रयोग करें तथा शेष प्रथम कटाई के बाद करें।

सिंचाई तथा जल प्रबंधन: वर्षा शुरू होने से पहले 10 से 12 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें सितंबर में भी सिंचाई की आवश्यकता पड़ सकती है अधिक सिंचाई होने पर ज्यादा देर तक खेत में पानी ने रुकने दे।

निराई गुड़ाई तथा खरपतवार नियंत्रण: पहली निराई गुड़ाई 20 से 25 दिन के बाद तथा दूसरी 40 से 50 दिन के बाद करें और सभी तरह के खरपतवार निकाल दें।

कटाई: तुलसी की कटाई किस समय करनी चाहिए यह एक महत्वपूर्ण है। क्योकि पौधे की कटाई उसके तेल की मात्रा पर प्रभाव डालती है। तुलसी की कटाई 10 से 12 सप्ताह में की जाती है। पौधों की निचली फसल की कटाई करें। अंतिम कटाई के समय पूरे पौधे को ही काट लें और काटकर तेल निकलवा सकते हैं। कटाई के बाद 4 से 5 घंटे फसल में हल्की धूप से सुखालय पहली कटाई तथा शेष कटाई या 45 दिन के अंतराल पर फसल की कटाई भूमि की सतह से 20 सेंटीमीटर ऊपर से करें, जिससे अगली कटाई के लिए फसल जल्दी तैयार हो सके। साख की पैदावार और तेल की मात्रा भूमि की उर्वरा शक्ति जलवायु पर निर्भर करती है। तेल पूरे पौधे के आसवन से प्राप्त होता है। इसका आसवन, जल तथा वाष्प, आसवन, दोनों विधि से किया जा सकता है। लेकिन वाष्प आसवन सबसे ज्यादा उपयुक्त होता है।

प्रमुख कीट: तुलसी के कई प्रकार के कीट पत्तियां वह फूलों को खाकर नष्ट कर देते हैं, जिनमें से निम्न है:

1. तुलसी का पर्णबेलक (बासिल लीफ रोलर): इस कीट का प्रकोप मैदानी भागों में जुलाई से सितंबर के मध्य देखा गया है। सुंडी इसकी सुंडी पत्तियां को लपेटकर अंदर ही अंदर नष्ट कर देती हैं। कभी-कभी कीट की सुंडी फूल के पास जाला बनाकर अंदर फूल को खा जाती है। इसकी रोकथाम के लिए 1 लीटर एंडोसल्फान 35 EC का 0.2 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर स्प्रे करें छिड़क दें।

2. रोम युक्त सुंडी (हेयरी कैटरपिलर): इस कीट की वयस्क समूह में निकली पत्तियों पर अंडे देती है। तथा 4 से 6 दिन में अंडे से कैटरपिलर बनने लगते हैं। प्रथम व द्वितीय अवस्था में सुंडीयों समूह में रहकर पूरा पौधा नष्ट कर जाती है तथा तीसरी व चौथी अवस्था में सुंडी एक पौधे से दूसरे पौधे पर फिर धीरे-धीरे पूरे खेत में पहुंच जाती है। इस के प्रकोप से फसल को बचाने के लिए शुरुआती अवस्था में जब समूह में हो पौधे को उखाड़ कर जला दें या एंडोसल्फान 4% या फॉलीडोल 2% धूल 10 किलोग्राम प्रति एकड़ दे सुंडी की तीसरी व चौथी अवस्था में नियंत्रण हेतु 1 लीटर एंडोसल्फान 35EC 0.2% की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें तथा निम आधारित कीटनाशकों का उपयोग भी अत्यधिक लाभदायक होता है

तुलसी के रोग

1. **झुलसा रोग –** गर्मियों में पत्तियाँ विकृत होने लगती हैं। पत्तियों पर जलने वाले धब्बे उभर आते हैं। फाइटो सैनिटरी विधि से इसकी रोकथाम करना चाहिए।
2. **जड़ गलन –** जल भराव से जड़ गलने लगती हैं और पौधे मुरझाने लगते हैं। पत्तियाँ पीली होकर झड़ने लगती हैं। इसकी रोकथाम के लिए तुलसी की जड़ों में बाविस्टिन के घोल का छिड़काव करना चाहिए।